Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उषा प्रियम्वदा की कहानियों में मानवीय मूल्यों का अनुशीलन : एक विवेचन

दिनेश कुमार*

* शोधार्थी, हिंदी अध्ययन शाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – मूल्य एक अमूर्त गुण है जो किसी वस्तु में निहित होता है तथा उसके महत्व की ओर इंगित करता है। समाज में जो भी घटना घटित होती हैं समाज उनका उचित अथवा अनुचित के रूप में मूल्यांकन करता है और ये मूल्य ही वैल्यू कहलाते हैं। मूल्य निर्धारण में सामाजिक पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक धरोहर का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। मूल्य पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं। देशकाल और परिस्थिति के अनुसार प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र के मूल्य में अंतर होता है। व्यक्ति अपने सामाजिक मूल्यों के अनुरूप अपने अथवा इन्हें प्राप्त करने हेतु अग्रसर एवं प्रयत्नशील रहता है ।

मानवीय मूल्य और आचारनीति सामान्य रूप से व्यक्ति या संगठन या समाज की गुणवत्ता को परिभाषित करते है। मानवीय मूल्य वे मूल्य है, जो मनुष्य की सहजता के लिए मूलभूत है, मानवीय मूल्य सभ्य और गरिमापूर्ण समाज का सबसे महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। समाज या राष्ट्र की पूरी संरचयें इस स्तभ पर निर्भर करती है। यदि यह स्तभ मजबूत होगा तो समाज सभ्य और समृद्ध होगा, यदि इस स्तभ में क्षति होती है, तो सिर्फ समाज अमानवीय चरण में प्रवेश कर सकता है, मानवीय मूल्यों के सूक्ष्म पहलुओं को प्रेषित करने की आवश्यकता होती है और उनको उतनी ही सावधानी से संरक्षित करने की आवश्यकता होती हैं। जैसे कि कोई माँ गर्भ की रक्षा करती है, मूल्य और आचार नीति की प्रकृति कपूर की भाँति है, अगर इन्हें ध्यान से संरक्षित न किया जाए तो वाष्पित हो जाते हैं।

मानवीयता सहज साक्ष्य रूप में पूर्णता, स्वराज्य, स्वतंत्रता और उसकी निरंतरता को जानने, मानने, पहचानने व निर्वाह करने, कराने और करने योग्य मूल्य, चरित्र, नैतिकता रूपी विधान। मानवीयता सहज जागृति पूर्णता ही अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था पूर्वक परंपरा के रूप में अर्थात पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में निरंतरता को प्रमाणित करता है। यह करना, कराना, करने के लिए सहमत होना मानव में, से, के लिए मौलिक विधान है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह किसी भी दशा में समाज से अलग होकर नहीं रह सकता। वह जहाँ भी रहेगा समाज से सदैव जुड़ा ही रहेगा। उसका ही अंग रहेगा यह बात अलग है कि वह स्वयं को समाज के अलग समझे। ऐसे में सामान्यत: व्यक्ति के नैतिक दायित्व हो जाता है कि व्यक्ति अपनी सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण करता रहे, मानवीय मूल्यों को पोषित करता रहे, यदि कोई व्यक्ति समाज से विलग होना चाहता है तो समाज को भी चाहिए कि उसे समय दे और इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था बनाने का प्रयास करे कि वह इस तथ्य को समझ सके कि समाज व परिवार का महत्व क्या है? इसकी आवश्यकता क्यों है? हमें सदैव इससे क्यों जुड़ा रहना चाहिए? भारत के उत्तरभारतीय समाज में एक प्रसिद्ध कहावत/लोकोक्ति प्रचलित है–'भय बिन होय न प्रीति।' जब तक व्यक्ति को यह तथ्य और महत्व समझ में नहीं आते कि समाज में उसका महत्व क्या हैं? उसका समाज के प्रति क्या दायित्व है? उसके लिए समाज क्यों आवश्यक है?' यह सभी विषय से व्यक्ति का आत्मसाक्षात्कार होना आवाश्यक है।

हमारे समाज में मानवीय मूल्य, मूल रूप से हमारे धर्म संस्कृत एवं दर्शन में हैं। यहीं से सत्य, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग, ममता, विश्वास, आस्था, करुणा, संयम आदि हम ग्रहण करते हैं। प्रेम, सद्भावना, समता, सम्मान आदि भाव हैं जो हमारे अंदर विश्व बंधुत्व य वसुधैव कुटुंबकम जैसे मूल्यों का निर्माण करते हैं। किसी भी राष्ट्र के विकास की गाथा लिखने के लिए मानवीय मूल्य ऊर्जा का स्त्रोत हैं। इन्हीं मानवीय मूल्यों व गुणों के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

उन्होंने कहा था, 'तुम सदैव याद रखना कि तुम भारत की सन्तान हो– हमेशा अपना सर अभिमान से ऊँचा रखना, और कभी ऐसा न करना कि तुम्हारे देश को तुम पर लज्जा हो, तुम भारत की अनौपचारिक राजदूत हो...।' और सरल हृदया माँ ने बिदा देते हुए कहा, 'देखो, अपने लम्बे बाल हरगिज न कटाना, और सिगरेट वगैरह के चक्कर में न पड़ जाना...।' शायद उनके मन में विदेश में जाकर बिगड़ गई स्त्री की यही छबि थी।[1]

लेखिका जब पढाई के लिए विदेश जा रही थी तो उनके दादा जी अपने देश के मानवीय मूल्यों और संस्कृति की याद दिलाते हुए उपर्युक्त बातें कहते हैं। वहां पर जाकर कोई भी ऐसा काम नहीं करना जिससे भारतीयता का सिर नीचा हो ।तुम वहां पर एक व्यक्ति नहीं बल्कि देश के अनौपचारिक राजदूत की तरह से हो अत: इन सब बातों का ख्याल रखना होगा आपको ।भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुए रहना। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण न कर लेना । हम सभी की भारतीय संस्कृति जो विश्व में एक अद्वितीय और अद्भुत संस्कृति है उसी का अनुसरण करते हुए रहना चाहिए चाहे हम देश में हों अथवा विदेश में ।

हमें भारतीय संस्कृति के मानवीय मूल्यों का ध्यान हमेशा रखना चाहिए।

'जिन्दगी में भूलें सबसे होती हैं। पर उन भूलों पर जान देना अक्लमन्दी नहीं। अवरुद्ध कंठ से कहकर उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरा था। भाभी ने बार–बार अपने से चिपटाकर आशीर्वादों की बौछार कर दी 'सुखी रहो। रानी बनकर रहो। अक्षय सुहाग हो।' जैसे अपनी असमर्थता शुभ आशीषों से पूरी

कर देंगी।'[2]

हम सभी मनुष्यों के बीच में रहते हैं इन सभी के बीच में एक दूसरे के साथ में कार्य करने का अवसर मिला करता है, एक दूसरे से गलतियां भी होती है तो उन गलतियों को हम सभी माफ करते हुए आगे बढते हैं। ऐसी बातें बोलते हुए मन्नो बन्नो को आशीर्वाद देते हुए कहती है।

'क्या आसानी से राजी हुए? आजकल की लड़कियाँ भी तो जबरदस्त होती हैं–पहले की तरह थोड़े ही हैं ! अन्न–जल त्यागकर पड़ गई थी। कहती थी कि आप न करेंगे शादी, तो सिविल मैरिज कर लूँगी। झख मारकर गए। लड़का पसन्द आ गया। रिश्ता पक्का कर आए। लौटकर मुझे बताया।'[3] यहां पर मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए भी शादी के प्रस्ताव के लिए अपने घर वालों को मना लिया था, जब इस तरह की बातें मन्नो की भाभी मन्नो से कहती हैं कि आसानी से नहीं माने थे घरवाले इस प्रस्ताव के लिए उनको मनाना पडा था।

'माँ ! मैंने चेतावनी देते हुए कहा। माँ ने आग्नेय दृष्टि मुझ पर डाली, पर मीठे स्वर में कहती रहीं, 'अब कहती है कि एम.ए. करके नौकरी करूँगी, अलग रहूँगी। पारसाल अच्छा–खासा कॉलेज में हंगामा मच चुका है। मैंने भाई साहब को लिखा कि इस साल उसे भेजने की जरूरत नहीं। पर उन्होंने नहीं माना। इस साल भी वही स्टेज पर नाचना–गाना, वही ड्रामों में पार्ट लेना। दस तरह के आदमी देखते हैं, दस तरह की बातें करते हैं।'[4]

एक गृहिणी जो अपने जीवन को पारंपरिक तरीके से जी रही थी। उसकी लडकी अब कालेज जाने के लिए जिद कर रही है और नौकरी करने के लिए जा रही है तो उस लडकी की मां उसको समझाते हुए बोलती हैं कि देखो बाहर दस तरह के आदमी होते हैं और दस तरीका की बात करते हैं इसलिए हमेशा सावधान रहना और अपने आप मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों को ध्यान रखना। सत्य ,दया , करूणा , नैतिकता , ईमानदारी को हमेशा ध्यान रखना, भारतीय संस्कृति को ध्यान रखना।

'तुम्हें मालूम नहीं चीरू–कि इस दुनिया में कितने लोग ऐसे हैं जो कि झूठे हैं, धोखेबाज हैं, पैसे के लिए सबकुछ करने को तैयार हैं। मगर तुम सबसे अलग हो, सबसे विलक्षण। तुममें आन है, एक गरिमा है, एक कोमलता है– मेरा मन कितने सालों तुम्हारे लिए रोता रहा...' आज के आधुनिक युग जगत में क ई बार लोग पैसा शोहरत के चलते हुए रिश्तों को न समझते हैं। लेकिन मेरे चीरू आप उन सबसे अलग हैं आप इन सब आधुनिकता की चीजों से परे हैं।

'अगर जिन्दगी के वाक्य का कर्ता ही बनना है तो कुछ करो, गढ़ो अपने को। सँवारों अपने व्यक्तित्व को। सिर्फ भौंहों को ही नहीं।'[5] मंजू श्री यहां पर विकास से कहती है कि देखो जीवन में अपने आप को संभालना है तो हमेशा अपने आप को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। अपने समग्र व्यक्तित्व को संवारने की कोशिश करना चाहिए ,सिर्फ चेहरे से सुंदर दिखाने की कोशिश नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष– मानव गरिमा प्रत्येक मनुष्य जाति के लिए जन्मजात रूप में आवश्यक है और सार्वभौमिक रूप से एक मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता प्राप्त है। जिसमें मानव सम्मान का अधिकार भी शामिल था। संविधान में रंगभेद प्रणाली को समाप्त कर दिया और मानवीय सम्मान, समानता और मानव अधिकारों और स्वतंत्रता की उन्नति के बुनियादी मूल्यों पर स्थापित एक संप्रभु लोकतांत्रिक राज्य का गठन किया। संवैधानिक न्यायालय ने मानवीय गरिमा को मूल संवैधानिक मूल्यों में से एक माना है और अन्य मौलिक अधिकारों जैसे समानता, व्यक्ति की सुरक्षा और जीवन का अधिकारों आदि के लिए नैतिक आधार स्थापित करने के लिए और एक सभ्य समाज के लिए, मानव गरिमा का उपयोग किया है। जो संविधान के मूल्यों को कानूनी प्रणाली के माध्यम से समाज के अस्तित्व में बनाए रखें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. उषा प्रियम्वदा, संपूर्ण कहानियां, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2024, पृष्ठ 13
2. उपरोक्त वहीं पृष्ठ 89
3. उपरोक्त वहीं पृष्ठ 89
4. उपरोक्त वहीं पृष्ठ 411
5. उपरोक्त वहीं पृष्ठ 433

****